James

1 Greetings from James, a servant of God and of the Lord Jesus Christ.

To God's people who are scattered all over the world.

Faith and Wisdom

2 My brothers and sisters, you will have many kinds of trouble. But this gives you a reason to be very happy. 3 You know that when your faith is tested, you learn to be patient in suffering. 4 If you let that patience work in you, the end result will be good. You will be mature and complete. You will be all that God wants you to be.

5 Do any of you need wisdom? Ask God for it. He is generous and enjoys giving to everyone. So he will give you wisdom. 6 But when you ask God, you must believe. Don't doubt him. Whoever doubts is like a wave in the sea that is blown up and down by the wind. 7-8 People like that are thinking two different things at the same time. They can never decide what to do. So they should not think they will receive anything from the Lord.

True Riches

9 Believers who are poor should be glad that God considers them so important. 10 Believers who are rich should be glad when bad things happen that humble them. Their riches won't keep them from disappearing as quickly as wildflowers. 11 As the sun rises and gets hotter, its heat dries up the plants, and the flowers fall off. The flowers that were so beautiful are now dead. That's how it is with the rich. While they are still making plans for their business, they will die.

Temptation Does Not Come From God

12 Great blessings belong to those who are tempted and remain faithful! After they have

याकूब

1 याकूब का, जो परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का दास है।

संतों के बारहों कुलों को नमस्कार पहुँचे जो समूचे संसार में फैले हुए हैं।

विश्वास और विवेक

2 हे मेरे भाइयों, जब कभी तुम तरह तरह की परीक्षाओं में पड़ो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो। 3 क्योंकि तुम यह जानते हो कि तुम्हारा विश्वास जब परीक्षा में सफल होता है तो उससे धैर्यपूर्ण सहन शक्ति उत्पन्न होती है। 4 और वह धैर्यपूर्ण सहन शक्ति एक ऐसी पूर्णता को जन्म देती है जिससे तुम ऐसे सिद्ध बन सकते हो जिनमें कोई कमी नहीं रह जाती है।

5 सो यदि तुममें से किसी में विवेक की कमी है तो वह उसे परमेश्वर से माँग सकता है। वह सभी को प्रसन्नता पूर्वक उदारता के साथ देता है। 6 बस विश्वास के साथ माँगा जाए। थोड़ा सा भी संदेह नहीं होना चाहिए। क्योंकि जिसको संदेह होता है, वह सागर की उस लहर के समान है जो हवा से उठती है और थरथराती है। 7 ऐसे मनुष्य को यह नहीं सोचना चाहिए कि उसे प्रभु से कुछ भी मिल पायेगा। 8 ऐसे मनुष्य का मन तो दुविधा से ग्रस्त है। वह अपने सभी कर्मो में अस्थिर रहता है।

सच्चा धन

9 साधारण परिस्थितियों वाले भाई को गर्व करना चाहिए कि परमेश्वर ने उसे आत्मा का धन दिया है। 10 और धनी भाई को गर्व करना चाहिए कि परमेश्वर ने उसे नम्रता दी है। क्योंकि उसे तो घास पर खिलने वाले फूल के समान झड़ जाना है। 11 सूरज कड़कड़ाती धूप लिए उगता है और पौधों को सुखा डालता है। उनकी फूल पत्तियाँ झड़ जाती हैं और सुन्दरता समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार धनी व्यक्ति भी अपनी भाग दौड़ के साथ समाप्त हो जाता है।

परमेश्वर परीक्षा नहीं लेता

12 वह व्यक्ति धन्य है जो परीक्षा में अटल रहता है क्योंकि परीक्षा में खरा उतरने के बाद वह जीवन के उस विजय मुकुट को धारण करेगा, जिसे परमेश्वर

proved their faith, God will give them the reward of eternal life. God promised this to all people who love him. 13 Whenever you feel tempted to do something bad, you should not say, "God is tempting me." Evil cannot tempt God, and God himself does not tempt anyone. 14 You are tempted by the evil things you want. Your own desire leads you away and traps you. 15 Your desire grows inside you until it results in sin. Then the sin grows bigger and bigger and finally ends in death.

16 My dear brothers and sisters, don't be fooled about this. 17 Everything good comes from God. Every perfect gift is from him. These good gifts come down from the Father who made all the lights in the sky. But God never changes like the shadows from those lights. He is always the same. 18 God decided to give us life through the true message he sent to us. He wanted us to be the most important of all that he created.

Listening and Obeying

19 My dear brothers and sisters, always be more willing to listen than to speak. Keep control of your anger. 20 Anger does not help you live the way God wants. 21 So get rid of everything evil in your lives—every kind of wrong you do. Be humble and accept God's teaching that is planted in your hearts. This teaching can save you.

22 Do what God's teaching says; don't just listen and do nothing. When you only sit and listen, you are fooling yourselves. 23 Hearing God's teaching and doing nothing is like looking at your face in the mirror 24 and doing nothing about what you saw. You go away and immediately forget how bad you looked. 25 But when you look into God's perfect law that sets people free, pay attention to it. If you do what it says, you will have God's blessing. Never just listen to his teaching and forget what you heard.

The True Way to Worship God

26 You might think you are a very religious person. But if your tongue is out of control, you

ने अपने प्रेम करने वालों को देने का वचन दिया है। 13परीक्षा की घड़ी में किसी को यह नहीं कहना चाहिए कि "परमेश्वर मेरी परीक्षा ले रहा है," क्योंकि बुरी बातों से परमेश्वर को कोई लेना देना नहीं है। वह किसी की परीक्षा नहीं लेता। 14हर कोई अपनी ही बुरी इच्छाओं के भ्रम में फँस कर परीक्षा में पड़ता है। 15फिर जब वह इच्छा गर्भवती होती है तो पाप पूरा बढ़ जाता है और वह मृत्यु को जन्म देता है।

16सो मेरे प्रिय भाईयों, धोखा मत खाओ। 17प्रत्येक उत्तम दान और परिपूर्ण उपहार ऊपर से ही मिलते हैं। और वे उस परम पिता के द्वारा जिसने स्वर्गीय प्रकाश को जन्म दिया है, नीचे लाए जाते हैं। वह नक्षत्रों की गतिविधि से उप्तन्न छाया से कभी बदलता नहीं है। 18सत्य के सुसंदेश के द्वारा अपनी संतान बनाने के लिए उसने हमें चुना। ताकि हम सभी प्राणियों के बीच उसकी फ़सल के पहले फल सिद्ध हों।

सुनना और उस पर चलना

19हे मेरे प्रिय भाईयों, याद रखो, हर किसी को तत्परता के साथ सुनना चाहिए, बोलने में शीघ्रता मत करो, क्रोध करने में उतावली मत बरतो। 20क्योंकि मनुष्य के क्रोध से परमेश्वर की धार्मिकता नहीं उपजती। 21हर घिनौने आचरण और चारो ओर फैली दुष्टता से दूर रहो। तथा नम्रता के साथ तुम्हारे हृदयों में रोपे गए परमेश्वर के वचन को ग्रहण करो जो तुम्हारी आत्माओं को उद्धार दिला सकता है।

22परमेश्वर की शिक्षा पर चलने वाले बनो, न कि केवल उसे सुनने वाले। यदि तुम केवल उसे सुनते भर हो तो तुम अपने आपको छल रहे हो। 23क्योंकि यदि कोई परमेश्वर की शिक्षा को सुनता तो है और उस पर चलता नहीं है, तो वह उस पुरुष के समान ही है जो अपने भौतिक मुख को दर्पण में देखता भर है। 24वह स्वयं को अच्छी तरह देखता है, पर जब वहाँ से चला जाता है तो तुरंत भूल जाता है कि वह कैसा दिख रहा था। 25किन्तु जो परमेश्वर की उस सम्पूर्ण व्यवस्था को निकटता से देखता है, जिससे स्वतन्त्रता प्राप्त होती है और उसी पर आचरण भी करता रहता है, और सुन कर उसे भूले बिना अपने आचरण में उतारता रहता है, वही अपने कर्मों के लिए धन्य होगा।

भक्ति का सच्चा मार्ग

26यदि कोई सोचता है कि वह भक्त है और अपनी जीभ पर कस कर लगाम नहीं लगाता तो

are fooling yourself. Your careless talk makes your offerings to God worthless. 27 The worship that God wants is this: caring for orphans or widows who need help and keeping yourself free from the world's evil influence. This is the kind of worship that God accepts as pure and good.

Love All People

2 My dear brothers and sisters, you are believers in our glorious Lord Jesus Christ. So don't treat some people better than others. 2 Suppose someone comes into your meeting wearing very nice clothes and a gold ring. At the same time a poor person comes in wearing old, dirty clothes. 3 You show special attention to the person wearing nice clothes. You say, "Sit here in this good seat." But you say to the poor person, "Stand there!" or "Sit on the floor by our feet!" 4 Doesn't this show that you think some people are more important than others? You set yourselves up as judges—judges who make bad decisions.

5 Listen, my dear brothers and sisters. God chose the poor people in the world to be rich in faith. He chose them to receive the kingdom God promised to those who love him. 6 But you show no respect to those who are poor. And you know that the rich are the ones who always try to control your lives. And they are the ones who take you to court. 7 And the rich are the ones who insult the wonderful name of Christ, the name by which you are known.

8 One law rules over all other laws. This royal law is found in the Scriptures: "Love your neighbor the same as you love yourself."* If you obey this law, you are doing right. 9 But if you are treating one person as more important than another, you are sinning. You are guilty of breaking God's law.

10 You might follow all of God's law. But if you fail to obey only one command, you are guilty of breaking all the commands in that law. 11 God said, "Don't commit adultery."* The same God also said, "Don't kill."* So if you don't commit

2:8 Quote from Lev. 19:18.

2:11 Quote from Ex. 20:14; Deut. 5:18.

वह धोखे में है। उसकी भक्ति निरर्थक है। 27परम पिता परमेश्वर के सामने सच्ची और शुद्ध भक्ति वही है जिसमें अनाथों और विधवाओं की उनके दुःख दर्द में सुधि ली जाए और स्वयं को कोई सांसारिक कलंक न लगने दिया जाए।

सबसे प्रेम करो

2 हे मेरे भाईयों, हमारे महिमावान प्रभु यीशु मसीह में जो तुम्हारा विश्वास है, वह पक्षपातपूर्ण न हो। 2कल्पना करो तुम्हारी सभा में कोई व्यक्ति सोने की अँगूठी और भव्य वस्त्र धारण किए हुए आता है। और तभी मैले कुचैले कपड़े पहने एक निर्धन व्यक्ति भी आता है। 3और तुम जिसने भव्य वस्त्र धारण किए हैं, उसको विशेष महत्त्व देते हुए कहते हो, "यहाँ इस उत्तम स्थान पर बैठो", जबकि उस निर्धन व्यक्ति से कहते हो, "वहाँ खड़ा रह" या "मेरे पैरों के पास बैठ जा।" 4ऐसा करते हुए क्या तुमने अपने बीच कोई भेद-भाव नहीं किया और बुरे विचारों के साथ न्यायकर्ता नहीं बन गए?

5हे मेरे प्यारे भाईयों, सुनो। क्या परमेश्वर ने संसार की आँखों में उन निर्धनों को विश्वास में धनी और उस राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में नहीं चुना, जिसका उसने, जो उसे प्रेम करते हैं, देने का वचन दिया है। 6किन्तु तुमने तो उस निर्धन व्यक्ति के प्रति घृणा दर्शायी है। क्या ये धनिक व्यक्ति वे ही नहीं हैं, जो तुम्हारा शोषण करते हैं और तुम्हें कचहरियों में घसीट ले जाते हैं? 7क्या ये वे ही नहीं हैं, जो मसीह के उस उत्तम नाम की निन्दा करते हैं, जो तुम्हें दिया गया है?

8यदि तुम शास्त्र में प्राप्त होने वाली इस उच्चतम व्यवस्था का सचमुच पालन करते हो, "अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो, जैसे तुम अपने आप से करते हो।"* तो तुम अच्छा ही करते हो। 9किन्तु यदि तुम पक्षपात दिखाते हो तो तुम पाप कर रहे हो। फिर तुम्हें व्यवस्था के विधान को तोड़ने वाला ठहराया जाएगा।

10क्योंकि कोई भी यदि समग्र व्यवस्था का पालन करता है और एक बात में चूक जाता है तो वह समूची व्यवस्था के उल्लंघन का दोषी हो जाता है। 11क्योंकि जिसने यह कहा था, "व्यभिचार मत करो"* उस ही ने यह भी कहा था, "हत्या मत करो।"* सो यदि तुम व्यभिचार नहीं करते किन्तु

2:8 देखें लैव्य. 19:18

2:11 देखें निर्गमन 20:14; व्यवस्था. 5:18

adultery, but you kill someone, you are guilty of breaking all of God's law.

[12] You will be judged by the law that makes people free. You should remember this in everything you say and do. [13] Yes, you must show mercy to others. If you do not show mercy, then God will not show mercy to you when he judges you. But the one who shows mercy can stand without fear before the Judge.

Faith and Good Works

[14] My brothers and sisters, if a person claims to have faith but does nothing, that faith is worth nothing. Faith like that cannot save anyone. [15] Suppose a brother or sister in Christ comes to you in need of clothes or something to eat. [16] And you say to them, "God be with you! I hope you stay warm and get plenty to eat," but you don't give them the things they need. If you don't help them, your words are worthless. [17] It is the same with faith. If it is just faith and nothing more—if it doesn't do anything—it is dead.

[18] But someone might argue, "Some people have faith, and others have good works." My answer would be that you can't show me your faith if you don't do anything. But I will show you my faith by the good I do. [19] You believe there is one God. That's good, but even the demons believe that! And they shake with fear.

[20] You fool! Faith that does nothing is worth nothing. Do you want me to prove this to you? [21] Our father Abraham was made right with God by what he did. He offered his son Isaac to God on the altar. [22] So you see that Abraham's faith and what he did worked together. His faith was made perfect by what he did. [23] This shows the full meaning of the Scriptures that say, "Abraham believed God, and because of this faith he was accepted as one who is right with God."* Abraham was called "God's friend."* [24] So you see that people are made right with God by what

हत्या करते हो तो तुम व्यवस्था को तोड़ने वाले हो।

[12]तुम उन्हीं लोगों के समान बोलो और उन ही के जैसा आचरण करो जिनका उस व्यवस्था के अनुसार न्याय होने जा रहा है, जिससे छुटकारा मिलता है। [13]जो दयालु नहीं है, उसके लिए परमेश्वर का न्याय भी बिना दया के ही होगा। किन्तु दया न्याय पर विजयी है।

विश्वास और सत् कर्म

[14]हे मेरे भाईयों, यदि कोई व्यक्ति कहता है कि वह विश्वासी है तो इसका क्या लाभ जब तक कि उसके कर्म विश्वास के अनुकूल न हो? ऐसा विश्वास क्या उसका उद्धार कर सकता है? [15]यदि भाइयों और बहनों को वस्त्रों की आवश्यकता हो, उनके पास खाने तक को न हो [16]और तुममें से ही कोई उनसे कहे, "शांति से जाओ, परमेश्वर तुम्हारा कल्याण करे, अपने को गरमाओ तथा अच्छी प्रकार भोजन करो" और तुम उनकी देह की आवश्यकताओं की वस्तुएँ उन्हें न दो तो फिर इसका क्या मूल्य है? [17]इसी प्रकार यदि विश्वास के साथ कर्म नहीं है तो वह अपने आप में निष्प्राण है।

[18]किन्तु कोई कह सकता है, "तुम्हारे पास विश्वास है, जबकि मेरे पास कर्म है अब तुम बिना कर्मों के अपना विश्वास दिखाओ और मैं तुम्हें अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा दिखाऊँगा।" [19]क्या तुम विश्वास करते हो कि परमेश्वर केवल एक है? अदभुत! दुष्टात्माएँ यह विश्वास करती हैं कि परमेश्वर है और वे काँपती रहती हैं।

[20]अरे मूर्ख! क्या तुझे प्रमाण चाहिए कि कर्म रहित विश्वास व्यर्थ है? [21]क्या हमारा पिता इब्राहीम अपने कर्मों के आधार पर ही उस समय धर्मी नहीं ठहराया गया था जब उसने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर अर्पित कर दिया था? [22]तू देख कि उसका वह विश्वास उसके कर्मों के साथ ही सक्रिय हो रहा था। और उसके कर्मों से ही उसका विश्वास परिपूर्ण किया गया था। [23]इस प्रकार शास्त्र का यह कहा पूरा हुआ था, "इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और विश्वास के आधार पर ही वह धर्मी ठहरा।"* और इसी से वह "परमेश्वर का मित्र"* कहलाया। [24]तुम देखो कि केवल विश्वास

2:11 Quote from Ex. 20:13; Deut. 5:17.

2:23 Quote from Gen. 15:6.

2:23 Quote from 2 Chron. 20:7; Isa. 41:8.

2:11 देखें निर्गमन 20:13; व्यवस्था. 5:17

2:23 देखें उत्पत्ति 15:6

2:23 देखें 2 इति. 20:7; यशा. 41:8

they do. They cannot be made right by faith alone.

25 Another example is Rahab. She was a prostitute, but she was made right with God by something she did. She helped those who were spying for God's people. She welcomed them into her home and helped them escape by a different road.

26 A person's body that does not have a spirit is dead. It is the same with faith—faith that does nothing is dead!

Controlling the Things We Say

3 My brothers and sisters, not many of you should be teachers. I say this because, as you know, we who teach will be judged more strictly than others.

2 We all make many mistakes. A person who never said anything wrong would be perfect. Someone like that would be able to control their whole body too. 3 We put bits into the mouths of horses to make them obey us. With these bits we can control their whole body. 4 It is the same with ships. A ship is very big, and it is pushed by strong winds. But a very small rudder controls that big ship. And the one who controls the rudder decides where the ship will go. It goes where he wants it to go. 5 It is the same with our tongue. It is a small part of the body, but it can boast about doing great things.

A big forest fire can be started with only a little flame. 6 The tongue is like a fire. It is a world of evil among the parts of our body. It spreads its evil through our whole body and starts a fire that influences all of life. It gets this fire from hell.

7 Humans have control over every kind of wild animal, bird, reptile, and fish, and they have controlled all these things. 8 But no one can control the tongue. It is wild and evil, full of deadly poison. 9 We use our tongues to praise our Lord and Father, but then we curse people who were created in God's likeness. 10 These praises and curses come from the same mouth. My brothers and sisters, this should not happen.

से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से ही व्यक्ति धर्मी ठहरता है।

25इसी प्रकार राहब वेश्या भी क्या उस समय अपने कर्मों से धर्मी नहीं ठहरायी गयी, जब उसने दूतों को अपने घर में शरण दी और फिर उन्हें दूसरे मार्ग से कहीं भेज दिया।

26इस प्रकार जैसे बिना आत्मा का देह मरा हुआ है, वैसे ही कर्म विहीन विश्वास भी निर्जीव है!

वाणी का संयम

3 हे मेरे भाईयों, तुममें से बहुत से को उपदेशक बनने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। तुम जानते ही हो कि हम उपदेशकों का और अधिक कड़ाई के साथ न्याय किया जाएगा।

2मैं तुम्हें ऐसे इसलिए चेता रहा हूँ कि हम सबसे बहुत सी भूल होती ही रहती हैं। यदि कोई बोलने में कोई भी चूक न करे तो वह एक सिद्ध व्यक्ति है तो फिर ऐसा कौन है जो उस पर पूरी तरह काबू पा सकता है? 3हम घोड़ों के मुँह में इसलिए लगाम लगाते हैं कि वे हमारे बस में रहें और इस प्रकार उनके समूचे देह को हम वश में कर सकते हैं। 4अथवा जलयानो का उदाहरण भी लिया जा सकता है। देखो, चाहे वे कितने ही बड़े होते हैं और शक्तिशाली हवाओं द्वारा चलाए जाते हैं, किन्तु एक छोटी सी पतवार से उनका नाविक उन्हें जहाँ कहीं ले जाना चाहता है, उन पर काबू पाकर उन्हें ले जाता है। 5इसी प्रकार जीभ, जो देह का एक छोटा सा अंग है, बड़ी-बड़ी बातें कर डालने की डींगे मारती है।

अब तनिक सोचो एक जरा सी लपट समूचे जंगल को जला सकती है। 6हाँ, जीभ एक लपट है। यह बुराई का एक पूरा संसार है। यह जीभ हमारे देह के अंगों में एक ऐसा अंग है, जो समूचे देह को भ्रष्ट कर डालता है और हमारे समूचे जीवन चक्र में ही आग लगा देता है। यह जीभ नरक की आग से धधकती रहती है।

7देखो, हर प्रकार के हिंसक पशु, पक्षी, रेंगने वाले जीव जंतु, पानी में रहने वाले प्राणी मनुष्य द्वारा वश में किए जा सकते हैं और किए भी गए हैं। 8किन्तु जीभ को कोई मनुष्य वश में नहीं कर सकता। यह घातक विष से भरी एक ऐसी बुराई है जो कभी चैन से नहीं रहती। 9हम इसी से अपने प्रभु और परमेश्वर की स्तुति करते हैं और इसी से लोगों को जो परमेश्वर की समरूपता में उत्पन्न किए गए हैं, कोसते भी हैं। 10एक ही मुँह से

11 Do good water and bad water flow from the
same spring? Of course not. 12 My brothers and
sisters, can a fig tree make olives? Or can a
grapevine make figs? No, and a well full of salty
water cannot give good water.

True Wisdom

13 Are there any among you who are really
wise and understanding? Then you should show
your wisdom by living right. You should do what
is good with humility. A wise person does not
boast. 14 If you are selfish and have bitter jealousy
in your hearts, you have no reason to boast. Your
boasting is a lie that hides the truth. 15 That kind
of "wisdom" does not come from God. That
"wisdom" comes from the world. It is not
spiritual. It is from the devil. 16 Where there is
jealousy and selfishness, there will be confusion
and every kind of evil. 17 But the wisdom that
comes from God is like this: First, it is pure. It is
also peaceful, gentle, and easy to please. This
wisdom is always ready to help people who have
trouble and to do good for others. This wisdom is
always fair and honest. 18 People who work for
peace in a peaceful way get the blessings that
come from right living.

Give Yourselves to God

4 Do you know where your fights and
arguments come from? They come from
the selfish desires that make war inside you.
2 You want things, but you don't get them. So
you kill and are jealous of others. But you still
cannot get what you want. So you argue and
fight. You don't get what you want because you
don't ask God. 3 Or when you ask, you don't
receive anything, because the reason you ask is
wrong. You only want to use it for your own
pleasure.

4 You people are not faithful to God! You
should know that loving what the world has
is the same as hating God. So anyone who
wants to be friends with this evil world
becomes God's enemy. 5 Do you think the
Scriptures mean nothing? The Scriptures say,

आशीर्वाद और अभिशाप दोनों निकलते हैं। मेरे
भाईयों, ऐसा तो नहीं होना चाहिए। 11सोते के एक
ही मुहाने से भला क्या मीठा और खारा दोनों तरह
का जल निकल सकता है? 12मेरे भाईयों क्या
अंजीर के पेड़ पर जैतून या अंगूर की लता पर
कभी अंजीर लगते हैं? निश्चय ही नहीं। और न
ही खारे स्रोत से कभी मीठा जल निकल पाता है।

सच्चा विवेक

13भला तुममें, ज्ञानी और समझदार कौन है? जो है,
उसे अपने व्यवहार से यह दिखाना चाहिए कि उसके
कर्म उस सज्जनता के साथ किए गए हैं जो ज्ञान से
जुड़ी है। 14किन्तु यदि तुम लोगों के हृदयों में भयंकर
ईर्ष्या और स्वार्थ भरा हुआ है, तो अपने ज्ञान का ढोल
मत पीटो। ऐसा करके तो तुम सत्य पर पर्दा डालते हुए
असत्य बोल रहे हो। 15ऐसा "ज्ञान" तो ऊपर अर्थात्
स्वर्ग से, प्राप्त नहीं होता, बल्कि वह तो भौतिक है।
आत्मिक नहीं है। तथा शैतान का है। 16क्योंकि जहाँ
ईर्ष्या और स्वार्थपूर्ण महत्त्वकाँक्षाएँ रहती हैं, वहाँ
अव्यवस्था और हर प्रकार की बुरी बातें रहती है।
17किन्तु स्वर्ग से आने वाला ज्ञान सबसे पहले तो
पवित्र होता है, फिर शांतिपूर्ण, सहनशील, सहज-प्रसन्न,
करुणापूर्ण होता है। और उससे उत्तम कर्मों की फ़सल
उपजती है। वह पक्षपात-रहित और सच्चा भी होता है।
18शांति के लिए काम करने वाले लोगों को ही धार्मिक
जीवन का फल प्राप्त होगा यदि उसे शांतिपूर्ण वातावरण
में बोया गया है।

परमेश्वर को समर्पित हो जाओ

4 तुम्हारे बीच लड़ाई-झगड़े क्यों होते हैं? क्या
उनका कारण तुम्हारे अपने ही भीतर नहीं है?
तुम्हारी वे भोग-विलासपूर्ण इच्छाएँ ही जो तुम्हारे भीतर
निरन्तर द्वन्द्ध करती रहती हैं, क्या उन्हीं से ये पैदा नहीं
होते? 2तुम लोग चाहते तो हो किन्तु तुम्हें मिल नहीं
पाता। तुम में ईर्ष्या है और तुम दूसरों की हत्या करते
हो, फिर भी जो चाहते हो, प्राप्त नहीं कर पाते। और
इसलिए लड़ते झगड़ते हो। अपनी इच्छित वस्तुओं को
तुम प्राप्त नहीं कर पाते क्योंकि तुम उन्हें परमेश्वर से
नहीं माँगते। 3और जब माँगते भी हो तो तुम्हारा उद्देश्य
अच्छा नहीं होता। क्योंकि तुम उन्हें अपने भोग-विलास
में ही उड़ाने को माँगते हो।

4ओ, विश्वास विहीन लोगों! क्या तुम नहीं जानते
कि संसार से प्रेम करना परमेश्वर से घृणा करने जैसा
ही है? जो कोई इस दुनिया से दोस्ती रखना चाहता है,
वह अपने आपको परमेश्वर का शत्रु बनाता है। 5अथवा

“The Spirit God made to live in us wants us
only for himself.” 6 But the kindness God shows
is greater. As the Scripture says, “God is
against the proud, but he is kind to the
humble.”*
7 So give yourselves to God. Stand against the
devil, and he will run away from you. 8 Come
near to God and he will come near to you. You
are sinners, so clean sin out of your lives. You
are trying to follow God and the world at the
same time. Make your thinking pure. 9 Be sad,
be sorry, and cry! Change your laughter into
crying. Change your joy into sadness. 10 Be
humble before the Lord, and he will make you
great.

You Are Not the Judge

11 Brothers and sisters, don’t say anything
against each other. If you criticize your brother
or sister in Christ or judge them, you are
criticizing and judging the law they follow. And
when you are judging the law, you are not a
follower of the law. You have become a judge.
12 God is the one who gave us the law, and he is
the Judge. He is the only one who can save
and destroy. So it is not right for you to judge
anyone.

Let God Plan Your Life

13 Some of you say, “Today or tomorrow we
will go to some city. We will stay there a year, do
business, and make money.” Listen, think about
this: 14 You don’t know what will happen
tomorrow. Your life is like a fog. You can see it
for a short time, but then it goes away. 15 So you
should say, “If the Lord wants, we will live and
do this or that.” 16 But now you are proud and
boast about yourself. All such boasting is wrong.
17 If you fail to do what you know is right, you
are sinning.

4:6 Quote from Prov. 3:34.

क्या तुम ऐसा सोचते हो कि शास्त्र ऐसा व्यर्थ में ही
कहता है कि, “परमेश्वर ने हमारे भीतर जो आत्मा दी
है, वह ईर्ष्यापूर्ण इच्छाओं से भरी रहती है।” 6किन्तु
परमेश्वर ने हम पर अत्यधिक अनुग्रह दर्शाया है, इसलिए
शास्त्र में कहा गया है, “परमेश्वर अभिमानियों का
विरोधी है, जबकि दीन जनों पर अपनी अनुग्रह दर्शाता
है।”*
7इसलिए अपने आपको परमेश्वर के अधीन कर
दो। शैतान का विरोध करो, वह तुम्हारे सामने से भाग
खड़ा होगा। 8परमेश्वर के पास आओ, वह भी तुम्हारे
पास आएगा। अरे पापियों! अपने हाथ शुद्ध करो और
अरे सन्देह करने वालों, अपने हृदयों को पवित्र करो।
9शोक करो, विलाप करो और दुःखी होओ। हो सकता
है तुम्हारे ये अट्टहास शोक में बदल जाए और तुम्हारी
यह प्रसन्नता विषाद में बदल जाए। 10प्रभु के सामने
दीन बनो। वह तुम्हें ऊँचा उठाएगा।

न्यायकर्त्ता तुम नहीं हो

11हे भाईयों, एक दूसरे के विरोध में बोलना बंद
करो। जो अपने ही भाई के विरोध में बोलता है,
अथवा उसे दोषी ठहराता है, वह व्यवस्था के ही
विरोध में बोलता है और व्यवस्था को दोषी ठहराता
है। और यदि तुम व्यवस्था पर दोष लगाते हो तो
व्यवस्था के विधान का पालन करने वाले नहीं
रहते वरन् उसके न्यायकर्त्ता बन जाते हो। 12व्यवस्था
के विधान को देने वाला और उसका न्याय करने
वाला तो बस एक ही है। और वही रक्षा कर
सकता है और वही नष्ट करता है। तो फिर अपने
साथी का न्याय करने वाले तुम कौन होते हो?

अपना जीवन परमेश्वर को चलाने दो

13ऐसा कहने वालो सुनो, “आज या कल हम इस
या उस नगर में जाकर साल-एक भर वहाँ व्यापार में
धन लगा बहुत सा पैसा बना लेंगे।” 14किन्तु तुम तो
इतना भी नहीं जानते कि कल तुम्हारे जीवन का क्या
बनेगा! देखो, तुम तो उस धुंध के समान हो जो थोड़ी
सी देर को उठती है और फिर खो जाती है। 15सो
इसके स्थान पर तुम्हें तो सदा यही कहना चाहिए,
“यदि प्रभु ने चाहा तो हम जीयेंगे और यह या वह
करेंगे।” 16किन्तु स्थिति तो यह है कि तुम तो अपने
आडम्बरों के लिए स्वयं पर गर्व करते हो। ऐसे सभी
गर्व बुरे हैं। 17तो फिर यह जानते हुए भी कि यह
उचित है, उसे नहीं करना पाप है।

4:6 देखें नीति. 3:34

A Warning to Rich and Selfish People

5 You rich people, listen! Cry and be very sad
because much trouble will come to you. 2 Your
riches will rot and be worth nothing. Your clothes
will be eaten by moths. 3 Your gold and silver
will rust, and that rust will be a proof that you
were wrong. That rust will eat your bodies like
fire. You saved your treasure in the last days.
4 People worked in your fields, but you did not
pay them. They are crying out against you. They
harvested your crops. Now the Lord All-Powerful
has heard their cries.

5 Your life on earth was full of rich living. You
pleased yourselves with everything you wanted.
You made yourselves fat, like an animal ready for
the day of slaughter. 6 You showed no mercy to
good people. They were not against you, but you
killed them.

Be Patient

7 Brothers and sisters, be patient; the Lord
will come. So be patient until that time. Look at
the farmers. They have to be patient. They
have to wait for their valuable crop to grow and
produce a harvest. They wait patiently for the
first rain and the last rain. 8 You must be patient
too. Never stop hoping. The Lord is coming soon.
9 Brothers and sisters, don't complain against
each other. If you don't stop complaining, you
will be judged guilty. And the Judge is ready to
come!

10 Brothers and sisters, follow the example of
the prophets who spoke for the Lord. They
suffered many bad things, but they were patient.
11 And we say that those who accepted their
troubles with patience now have God's blessing.
You have heard about Job's patience. You know
that after all his troubles, the Lord helped him.
This shows that the Lord is full of mercy and is
kind.

Be Careful What You Say

12 My brothers and sisters, it is very important
that you not use an oath when you make a
promise. Don't use the name of heaven, earth,

स्वार्थी धनी दण्ड के भागी होंगे

5 हे धनवानों सुनो, जो विपत्तियाँ तुम पर आने
वाली हैं, उनके लिए रोओ और ऊँचे स्वर में
विलाप करो। 2 तुम्हारा धन सड़ चुका हैं। तुम्हारी पोशाकें
कीड़ों द्वारा खा ली गई हैं। 3 तुम्हारा सोना चाँदी जंग
लगने से बिगड़ गया है। उन पर लगी जंग तुम्हारे
विरोध में गवाही देगी और तुम्हारे मांस को अग्नि की
तरह चट कर जाएगी। तुमने अपना खज़ाना उस आयु
में एक ओर उठा कर रख दिया है जिसका अंत आने
को है। 4 देखो, तुम्हारे खेतों में जिन मज़दूरों ने काम
किया, तुमने उनका मेहनताना रोक रखा है। वही
मेहनताना चीख पुकार कर रहा है और खेतों में काम
करने वालों की वे चीख पुकारें सर्वशक्तिमान प्रभु के
कानों तक जा पहुँची हैं।

5 धरती पर तुमने विलासपूर्ण जीवन जीया है और
अपने आपको भोग-विलासों में डुबोये रखा है। इस
प्रकार तुमने अपने आपको वध किए जाने के दिन के
लिए पाल-पोसकर हृष्ट-पुष्ट कर लिया है। 6 तुमने
भोले लोगों को दोषी ठहराकर उनके किसी प्रतिरोध के
अभाव में ही उनकी हत्याएँ कर डाली।

धैर्य रखो

7 सो भाईयों, प्रभु के फिर से आने तक धीरज
धरो। उस किसान का ध्यान धरो जो अपनी धरती
की मूल्यवान उपज के लिए बाट जोहता रहता है।
इसके लिए वह आरम्भिक वर्षा से लेकर बाद की
वर्षा तक निरन्तर धैर्य के साथ बाट जोहता रहता
है। 8 तुम्हें भी धैर्य के साथ बाट जोहनी होगी।
अपने हृदयों को दृढ़ बनाए रखो क्योंकि प्रभु का
दुबारा आना निकट ही है। 9 हे भाईयों, आपस में एक
दूसरे की शिकायतें मत करो ताकि तुम्हें अपराधी न
ठहराया जाए। देखो, न्यायकर्त्ता तो भीतर आने के लिए
द्वार पर ही खड़ा है।

10 हे भाईयों, उन भविष्यवक्ताओं को याद रखो
जिन्होंने प्रभु के लिए बोला। वे हमारे लिए यातनाएँ
झेलने और धैर्यपूर्ण सहनशीलता के उदाहरण हैं।
11 ध्यान रखना, हम उनकी सहनशीलता के कारण
उनको धन्य मानते हैं। तुमने अय्यूब के धीरज के
बारे में सुना ही है और प्रभु ने उसे उसका जो
परिणाम प्रदान किया, उसे भी तुम जानते ही हो कि
प्रभु कितना दयालु और करुणापूर्ण है।

सोच समझ कर बोलो

12 हे मेरे भाईयों, सबसे बड़ी बात यह है कि
स्वर्ग की अथवा धरती की या किसी भी प्रकार की

or anything else to prove what you say. When you mean yes, say only "yes." When you mean no, say only "no." Do this so that you will not be judged guilty.

The Power of Prayer

13 Are you having troubles? You should pray. Are you happy? You should sing. 14 Are you sick? Ask the elders of the church to come and rub oil on you in the name of the Lord and pray for you. 15 If such a prayer is offered in faith, it will heal anyone who is sick. The Lord will heal them. And if they have sinned, he will forgive them.

16 So always tell each other the wrong things you have done. Then pray for each other. Do this so that God can heal you. Anyone who lives the way God wants can pray, and great things will happen. 17 Elijah was a person just like us. He prayed that it would not rain. And it did not rain on the land for three and a half years! 18 Then Elijah prayed that it would rain. And the rain came down from the sky, and the land grew crops again.

Helping People When They Sin

19 My brothers and sisters, if anyone wanders away from the truth and someone helps that person come back, 20 remember this: Anyone who brings a sinner back from the wrong way will save that person from eternal death and cause many sins to be forgiven.

कसमें खाना छोड़ो। तुम्हारी "हाँ", हाँ होनी चाहिए, और "ना" ना होनी चाहिए। ताकि तुम पर परमेश्वर का दण्ड न पड़े।

प्रार्थना की शक्ति

13यदि तुममें से कोई विपत्ति में पड़ा है तो उसे प्रार्थना करनी चाहिए और यदि कोई प्रसन्न है तो उसे स्तुति-गीत गाने चाहिए। 14यदि तुम्हारे बीच कोई रोगी है तो उसे कलीसिया के अगुवाओं को बुलाना चाहिए कि वे उसके लिए प्रार्थना करें और उस पर प्रभु के नाम में तेल मलें। 15विश्वास के साथ की गई प्रार्थना से रोगी निरोग होता है। और प्रभु उसे उठाकर खड़ा कर देता है। यदि उसने पाप किए हैं तो प्रभु उसे क्षमा कर देगा।

16इसलिए अपने पापों को परस्पर स्वीकार और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो ताकि तुम भले चंगे हो जाओ। धार्मिक व्यक्ति की प्रार्थना शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण होती है। 17नबी एलिय्याह एक मनुष्य ही था ठीक हमारे जैसा। उसने तीव्रता के साथ प्रार्थना की कि वर्षा न हो और साढ़े तीन साल तक धरती पर वर्षा नहीं हुई। 18उसने फिर प्रार्थना की और आकाश में वर्षा उमड़ पड़ी तथा धरती ने अपनी फसलें उपजायीं।

एक आत्मा की रक्षा

19हे मेरे भाईयों, तुममें से कोई यदि सत्य से भटक जाए और उसे कोई फिर लौटा लाए तो उसे यह पता होना चाहिए कि, 20जो किसी पापी को पाप के मार्ग से लौटा लाता है वह उस पापी की आत्मा को अनन्त मृत्यु से बचाता है और उसके अनेक पापों को क्षमा किए जाने का कारण बनता है।